[This question paper contains 6 printed pages.]

8771 *आपका अनुक्रमांक* _____

B.A. (Programme) / II **AS**

(T)

HINDI DISCIPLINE – Paper II

हिन्दी अनुशासन – प्रश्न-पत्र – II

(हिन्दी गद्य विधाएँ, उपन्यास और गद्य साहित्य का परिचयात्मक इतिहास)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 100*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट :- प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक SOL/NCWEB/Non-Formal Cell के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अद्दीनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में कम होंगे।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (12 + 12)

(क) धूल का अंधड़ आने से पूर्व जैसे समूचे शहर में एक पीला, दम घोटनेवाला, आशंकित धुंधलका-धुंधलका भी नहीं - उजाले का गिलगिला सा फैल जाता है, जब हम सूनी सड़क पर किसी अज्ञात घर की दीवार से सटे खड़े रहते हैं - और हर वह चीज़, जो बहुत साधारण और परिचित है - एक भयावह, विकृत छाया लिए सामने से गुजर जाती है - मेरे लिए मध्य यूरोप का यह बहुत पुराना, परिचित स्मृत-चित्र है, जो आज भी रेल की खिड़की के बाहर देखते हुए उभर आता है।

P.T.O.

अथवा

कहते हैं दुनिया बड़ी भुलक्कड़ है। केवल उतना ही याद रखती है, जितने से उसका स्वार्थ सधता है। बाकी को फेंककर आगे बढ़ जाती है। शायद अशोक से उसका स्वार्थ नहीं सधा। क्यों उसे वह याद रखती ? सारा संसार स्वार्थ का अखाड़ा ही तो है !

(ख) सदियों से बंगाल-हम लोगों-पर बार-बार बाहरी हमले होते रहे, मगर आक्रमणकारी कभी भी यहाँ की शस्यश्यामला पवित्र भूमि को नहीं रौंद सके। यहाँ मनुष्य को इतना समय मिल चुका था कि वह बैठा आराम से इतने सुंदर और स्वच्छ घर बना सकता। और आज वही घर निर्जनता की अगेला लगाए मूक खड़े थे ! अकाल ने उन पर अपनी जो वीभत्स छाया डाली थी, उसका धुंधलका अभी तक भी मानो कोनों में छिपा बैठा था।

अथवा

लात घूँसा, थप्पड़, लाठी आदि का सुविधानुसार प्रयोग किया गया, पर अपराधिनी ने न दोष स्वीकार किया, न क्षमा माँगी और न रोई-चिल्लाई। इच्छा होने पर बिविया लात-घूँसे का उत्तर बेलन-चिमटे से देने का सामर्थ्य रखती थी, पर वह झनकू का इतना आदर करने लगी थी कि उसका हाथ न उठ सका।

2. (क) किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- (5×4)

(i) 'अशोक के फूल' में लेखक की उदासी का क्या कारण था ? वह कैसे दूर हुई ?

(ii) गजाधर बाबू ने वापसी का निर्णय क्यों लिया ?

(iii) 'जनशक्ति कभी पराजित नहीं होती। वह कभी मर नहीं सकती।' 'तूफानों के बीच' के आलोक में प्रस्तुत कथन पर विचार कीजिए।

(iv) 'सूखी डाली' का क्या संदेश है ?

(v) 'भोलाराम का जीव' में लेखक ने सरकारी तंत्र की कलाई किस प्रकार खोली है ?

(vi) 'ठाकुर का कुआँ' के आधार पर भारतीय समाज में दलित स्त्री की स्थिति पर विचार कीजिए।

(vii) रवीन्द्रनाथ ने भारतवर्ष को महामानव समुद्र क्यों कहा है ?

(ख) किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×3)

(i) 'अशोक कल्प' के अनुसार अशोक के फूल कितने प्रकार के होते थे ? उनकी क्या उपयोगिता थी ?

(ii) बंगाल का कौन सा क्षेत्र अकाल की विभीषिका से प्रभावित हुआ ?

(iii) साहब ने भोलाराम की दरख्वास्त पर वज़न के रूप में नारद से क्या माँगा और क्यों ?

(iv) 'सूखी डाली' में कुल कितने स्त्री पात्र हैं ?

(v) अंग्रेज़ी के 'चीयर्स' शब्द के लिए आइसलैंड में किस शब्द का प्रयोग किया जाता है ?

P.T.O.

(vi) बिबिया ने ठर्रे का अड्डा किससे मँगवाया और क्यों ?

(vii) भोलाराम का जीव कहाँ अटका था ? उसे किसने खोजा ?

3. किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10)

(i) इस आभूषण - मंडित संसार में पली हुई जालपा का यह आभूषण-प्रेम स्वाभाविक ही था। महीने भर से ऊपर हो गया, उसकी दशा ज्यों-की-त्यों है। न कुछ खाती-पीती है, न किसी से हँसती-बोलती है। खाट पर पड़ी हुई शून्य नेत्रों से शून्याकाश की ओर ताकती है। सारा घर समझा कर हार गया, पड़ोसिनें समझाकर हार गईं, दीनदयाल आकर समझा गए; पर जालपा ने रोग-शैय्या न छोड़ी। उसे अब घर में किसी पर विश्वास नहीं है, यहाँ तक कि रमा से भी उदासीन रहती है। वह समझती है कि सारा घर मेरी उपेक्षा कर रहा है। जब इनके पास इतना धन है तो फिर मेरे गहने क्यों नहीं बनवाते ? (गबन)

(ii) जिन भावनाओं को कभी उसने अपने मन में आश्रय न दिया था, जिनकी गहराई और विस्तार और उद्वेग से वह इतना भयभीत था कि उनमें फिसलकर डूब जाने के भय से चंचल मन को उधर भटकने भी न देता था, उसी अथाह और अछोह कल्पना- सागर में वह आज स्वच्छंद रूप से क्रीड़ा करने लगा। उसे अब एक नौका मिल गई थी। वह त्रिवेणी की सेर, वह अलफ्रेड पार्क की बाहर, वह खुसरो बाग का आनंद, वह मित्रों के जलसे, सब याद आ-आकर हृदय को गुदगुदाने लगे। (गबन)

(iii) समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंडर स्टैंडिंग पैदा करने की इच्छा से नहीं होता था वरन् एक-दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकाँक्षा से। तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे-लेटे दूसरे को दुःखी बेचैन और छटपटाते हुए देखने की आकाँक्षा में रातें। भीतर ही भीतर चलनेवाली एक अजीब ही लड़ाई थी वह भी, जिसमें दम साधकर दोनों ने हर दिन प्रतीक्षा की थी कि कब सामने वाले की साँस उखड़ जाती है और वह घुटने टेक देता है, जिससे कि फिर वह बड़ी उदारता और क्षमाशीलता के साथ उसके सारे गुनाह माफ करके उसे स्वीकार कर ले, उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को एक निरे शून्य में बदल कर। (आपका बंटी)

(iv) और कमरे का सारा सामान, झूलते हुए पर्दे, झिलमिलाता झाड़ फानूस सब एकाएक धूमिल हो उठे। चारों ओर बिखरा वैभव जैसे एक बिन्दु में सिमट आया। मन में कुछ बुरी तरह सुलगने लगा। मन हुआ कि हाथ पकड़-कर बंटी को भीतर ले जाए और कहे कि बैठकर पढ़ो। या एकदम निकाल दे कि जाओ, अभी जाओ। पर नहीं, वह कुछ नहीं कर सकती। यहां आने के बाद से ही वह बंटी पर धीरे-धीरे अधिकार खोती रही है। आज तो चाहकर भी वह कुछ कह नहीं सकती या कि वह कुछ भी क्यों कहे ? (आपका बंटी)

4. किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए :- (15)

(i) 'गबन' के कथानक की विशेषताएँ लिखिए।

(ii) 'गबन' के स्त्री पात्रों के आधार पर प्रेमचंद की नारी-दृष्टि पर विचार कीजिए।

(iii) 'बंटी को लेकर अजय और शकुन एक दूसरे को 'टॉर्चर' करना चाहते हैं, बंटी के संदर्भ में दोनों ने कभी नहीं सोचा - कथन की सत्यता की जाँच कीजिए।

(iv) 'आपका बंटी' की औपन्यासिक कला पर प्रकाश डालिए।

5. हिन्दी नाटक के विकास के मुख्य बिन्दुओं की चर्चा कीजिए।

अथवा

द्विवेदी युगीन निबंधों का परिचय दीजिए। (13)

6. हिन्दी रिपोर्ताज़ **अथवा** हिन्दी कहानी के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए। (12)